International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 01, January - March, 2021, pp.330-334

सिद्वराज ढड्डाः राजस्थान मे सर्वोदय विचार के अग्रदूत एवं समग्र क्रांति के उपासक

कृष्ण सिंह*

प्रस्तावना

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अनेक युवकों को गांधीवाद और आजादी मिलने पर सर्वोदय के विचार ने अत्यंत प्रभावित किया तथा वे समग्रक्रांति के इस विचार से जुडें तथा इस दिशा में सराहनीय कार्य किया। परंतु कुछ समय पश्चात ही स्वदेशी, स्वभाषा, स्वभूषा तथा राष्ट्रवादी संस्कारो के आधार पर चलने वाले ये आंदोलन अपने पथ से भटक गये अर्थात दिशाहीन हो गये। इनसे संबधित अधिकाशं लोग कांग्रेस में शामिल होकर सता और प्रभुत्व की राजनीति मे उतर गये परंतु कुछ ऐसे लोग भी थे जिन्होने आजीवन देशसेवा,सर्वोदय के विचार के मार्ग को नही छोड़ा। 12 फरवरी 1909 को जयपुर के एक अति संपन्न परिवार मे जन्में श्री सिद्वराज ढड्डा भी ऐसे ही एक कर्मयोगी थे।

सिद्वराज जी के पिता श्री गुलाबचदं जी ढड्डा ने जयपुर रियासत की न्यायिक सेवा में और आबू रियासत के वकील के रुप में कार्य किया। साथ ही वे शिक्षा,धर्म व सामाजिक कार्यो में भी पूरी रुचि के साथ सक्रिय थे। वे अनेक अखिल भारतीय एवं स्थानीय स्तर की सामाजिक संस्थाओं के संस्थापक तथा अध्यक्ष थें। सरकारी सेवा के अतिरिक्त वे अपना सपूंर्ण समय सामाजिक प्रवृतियों मे लगाते थें। साथ ही परिवार में धार्मिक कार्यक्रम, जैन साधु–मुनियों का आगमन तथा तीर्थाटन व देशाटन होता रहता था। बालक सिद्वराज भी धार्मिक चर्चाओं व सामाजिक विषयों के व्याख्यान ध्यान से सुनते और मनन करते । इस प्रकार परिवार के सौम्य एवं सांस्कृतिक वातावरण और विशेष रुप से पिता का सानिध्य एवं उनकी सामाजिक एवं सार्वजनिक सेवा प्रवृतियों ने उनके मन पर प्रारंभ से ही प्रभाव डाला जो निरन्तर गहरा होता गया तथा सार्वजनिक जीवन में उतरनें के लिए प्रेरणा का मुख्य स्त्रोत बना।

श्री सिद्वराज जी की प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा घर पर हुई।1924 में जयपुर स्थित महाराजा स्कूल से इन्होने हाईस्कूल उत्तीर्ण की। जब ये हाई स्कूल की छठी–सातवी मे पढ़ते थे, तब देश मे गांधी जी के नेतृत्व मे राष्ट्रीय आंदोलन प्रांरभ हो चुका था।उन दिनों बंबई से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक 'टाइम्स ऑफ इंडिया' इनके घर पर आता था। यघपि यह पत्र अंग्रेजो का पोषक और ब्रिटिश राज का समर्थक था, लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन की हलचलों के समाचार भी उसमें छपते थे।सिद्वराज जी इन समाचारों को रुचि से ध्यान पूर्वक पढ़तें थें। गाधीं जी द्वारा संपादित 'यगं इंडिया' पत्र को भी वे नियमित पढतें थें। 'यगं इंडिया' में गांधी के लेखन व विचारों से वें अत्यंत प्रभावित हुए।इसके साथ ही गांधी जी द्वारा संपादित व रचित अन्य साहित्य का भी उन्होने अध्ययन किया। इन सबसे गांधी के विचारों के प्रति उनकी निष्ठा बढ़ती गई। गांधी के राजनीतिक विचारों के साथ ही उनकी नवीन समाज सरंचना के लिए शोषण मुक्त आर्थिक नीति के प्रति निष्ठा व अगाध श्रद्वा हुई और वे गांधी के ग्राम स्वराज एवं ग्राम स्वावलंबन,शोषण मुक्त समाज, सामाजिक एवं राजनीतिक विकेन्द्रीकरण के विचारों की और आकर्षित हुए।

6 शोधार्थी, भारतीय इतिहास एंव संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर, राजस्थान।

महाराज हाई स्कूल मे अध्ययन के दौरान ही उनका संपर्क पंडित हीरालाल शास्त्री से हुआ जो वहा अध्यापक थें। शास्त्री राष्ट्रीय आंदोलन व रचनात्मक कार्यो के प्रति पूर्ण समर्पित थे। शास्त्री के अल्पकालिक अध्ययन काल मे इनके और सिद्वराज के बीच स्थापित गुरु–शिष्य का संबंध जीवनपर्यंत रहा।

हाई स्कूल उत्तीर्ण करने के पश्चात उच्च शिक्षण के लिए महाराजा कॉलेज का रुख किया। यहां अध्ययन के साथ–साथ इनका झुकाव व समर्पण राष्ट्रीय आंदोलन की तरफ होने लगा। इन्ही दिनों सेठ जमनालाल बजाज के साथ भी इनका पत्र व्यवहार शुरु हो गया ।सन् 1928 में लखनऊ के केनिंग कॉलेज से उन्होने स्नातक की डिग्री ली तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन्1930 में राजनीतिशास्त्र मे परास्नातक (एम0 ए0) तथा सन् 1931 में एल0एल0बी की दीक्षा प्राप्त की।उस दौर मे देश मे राष्ट्रीय आंदोलन चरमोत्कर्ष पर था तथा युवा एवं छात्र वर्ग पर भी इसका गहन प्रभाव था।युवा वर्ग में साम्यवादी व समाजवादी विचारो का प्रभाव था परंतु सिद्वराज जी गांधी जी की विचारधारा के समर्थक थे। भारत के भावी निर्माण के लिए वे गांधी जी के सामाजिक–आर्थिक रचनात्मक कार्यक्रम का तर्कपूर्ण व नीतिगत रुप से समर्थन करते थे। वे 1929–1930 में इलाहाबाद यूथलीग के तथा 1930–1931 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंध के अध्यक्ष रहें। इनके सहपाठियों में विख्यात कम्यूनिस्ट नेता पूर्णचन्द्र जोशी तथा काग्रेंसी नेता सादिक अली प्रमुख थे। सादिक अली ने अनेक वर्षो तक काग्रेंस के सचिव व महासचिव पद का दायित्व संभाला।वे तमिलनाडू व महाराष्ट्र के राज्यपाल के पद पर भी रहें। इनके नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार एवं शराबबंदी के समर्थन के समर्थन मे धरना दिया गया।

अध्ययन पूर्ण करने के बाद सिद्वराज जी ने वकालत प्रांरभ की तथा सन्1934 से 1942 तक इंडिया चैम्बस ऑफ कॉमर्स में मंत्री पद के दायित्व का निर्वहन किया। चैम्बर में कार्यकाल की अवधि के दौरान वे अखिल भारतीय चीनी मिल संघ, अखिल भारतीय कागज मिल संघ आदि अखिल भारतीय व्यापारिक संस्थाओं के भी पदाधिकारी रहे।

इंडिया चैम्बस ऑफ कॉमर्स के कार्यकाल के दौरान वे विभिन्न सार्वजनिक, सामाजिक व रचनात्मक प्रवृतियों में संलग्न रहे। उन्होने कलकता से प्रकाशित दैनिक हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड के संपादक मनोंरजन गुहा एवं प्रसिद्व गांधीवादी अन्नदा प्रसाद राय चौधरी के साथ मिलकर गांधीजी द्वारा प्रकाशित 'हरिजन' पत्र का बांग्ला संस्करण निकाला।वे वहां हरिजन उत्थान समिति कलकता के मंत्री, तथा बंगाल हरिजन बोर्ड के सदस्य के रुप में भी कार्य करते रहें। वे देश की औधोगिक व आर्थिक समस्याओं पर तथा गांधी जी कि राजनीति एवं आर्थिक विचारधारा जैसे विषयों पर नियमित रुप से लिखतें थे। उनके लेख एवं रचनायें प्रमुख अग्रेंजी दैनिक यथा हिन्दुस्तान टाइम्स, अमृतबाजार पत्रिका, हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड, कलकता तथा 'विशाल भारत, हंस व त्याग भूमि आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती थी। कलकता में वे राजस्थानी युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत थे। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गांधी जी के 'करो या मरो' के आह्वान पर उन्होने चैम्बर के मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया।

17 अगस्त 1942 को चैम्बर के मंत्री पद से त्यागपत्र देने के पश्चात उन्होन अपना भावी जीवन पूर्णतया सार्वजिनक रचनात्मक कार्यो में लगाने का प्रण लिया। इसी दौरान दिल्ली में उनकी भेंट श्री जयप्रकाश नारायण से हुई। जयप्रकाश तब हजारीबाग से जेल तोड़कर बाहर आ गयें थें तथा भूमिगत होकर आंदोलन को दिशा देने का कार्य कर रहें थे। जयप्रकाश नारायण, डॉ राममनोहर लोहिया आदि के दिशा निर्देशन में सिद्वराज जी ने हिन्दी प्रचार व बुलेटिन प्रकाशन का कार्य अपने हाथ में लिया और जनवरी 1934 में बनारस में पुलिस की गिरफ्त में आने के पश्चात नजरबंद कर दिये गयें।

1945 में जेल से रिहा होने के बाद वे जयपुर आकर जयपुर प्रजामण्डल में सक्रिय हो गयें। वे अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के राजस्थान शाखा के मंत्री बने और जब इसे राजस्थान प्रदेश कांग्रेस का स्वरुप दिया गया तब वे इसके महांमत्री रहें। प्रादेशिक राजनीति मे सक्रिय रहतें हुए सन् 1946 में जयपुर से उन्होने 'दैनिक लोकवाणी' का प्रकाशन प्रांरभ किया।

सिद्वराज जी अपने शिक्षण काल से राष्ट्रीय आंदोलन की भावना से ओत–प्रोत थे तथा वे सामाजिक व राजनीतिक जन जागरण के लिए समाचार पत्र, पत्रिकाओं के महत्त्व को भली भांति जानतें थे। तत्कालीन राजपुताना की रियासतों में समाचार पत्रों के प्रकाशन पर कठोर नियंत्रण स्थापित था तथा यहा पर सामाजिक व राजनीतिक चेतना जागृति के लिए प्रजामंडल आंदोलन का नेतृत्व पूर्णतया दिल्ली–आगरा इत्यादि स्थानों से प्रकाशित समाचार पत्रों पर निर्भर था। रियासतों में राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना के लिए समाचार कि महती आवश्यकता थी तथा इसी दिशा में सेठ जमनालाल बजाज की पुण्य स्मृति में सन् 1943 से साप्ताहिक 'लोकवाणी' जयपुर से प्रकाशित होने लगी। परंतु रियासती आजादी को साकार करने और आजाद देश के निर्माण की दृष्टि से जयपुर में दैनिक पत्र की आवश्यकता अधिकाधिक प्रतीत होने लगी।इस दिशा में श्री हीरालाल शास्त्री,गोकुल भाई भट्ट,जयनारायण व्यास, माणिक्य लाल वर्मा, हरिभाऊ उपाध्याय आदि प्रजामण्डल के नेताओ से विचार विर्मश के बाद 1 अप्रैल 1946 से दैनिक लोकवाणी के प्रकाशन को साकार रुप दे दिया गया। लोकवाणी के प्रकाशन के पीछे एक उदात भावना एवं जनजागरण का अभियान था।

'लोकवाणी' के संपादन के साथ–साथ वे राजस्थान कांग्रेस के महामंत्री के दायित्व का भी निर्वहन कर रहे थे। आजादी के बाद सन्1948 में जयपुर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महाधिवेशन हुआ जिसमें स्वागत समिति में सयुंक्त मंत्री के पद का निर्वहन करते हुए इसे आशातीत रुप से एक सफल आयोजन बनाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लगभग 562 देशी रियासतों के एकीकरण का कार्य सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में हुआ। राजस्थान का एकीकरण राजपुताना की 19 रियासतों, 3 ठिकानों व अजमेंर –मेरवाड़ा की चीफशिप को मिलाकर सात चरणों में पूर्ण हुआ। इसी कड़ी में चतुर्थ चरण में चार प्रमुख रियासतों जयपुर,जोधपुर, बीकानेर,व जैसलमेर का संयुक्त राजस्थान की रियासतों को मिलाकर 30मार्च1949 को जयपुर को इसकी राजधानी बनाते हुए वृहद राजस्थान का नाम दिया गया। इसी दिन की याद में प्रति वर्ष 30मार्च को 'राजस्थान दिवस' के रुप में मनाया जाता है। वृहद राजस्थान के मंत्रिमंडल का गठन हीरालाल शास्त्री को मुख्यमंत्री बनाकर किया गया। जिसमें सिद्वराज जी को उधोग एवं व्यापार मंत्री के पद का दायित्व दिया गया। लगभग ढाई वर्ष तक उन्होने इस पद के दायित्व का निर्वहन किया।मंत्री पद पर रहते हुए उन्होने गांधी जी के आर्थिक कार्यक्रमों व रीति–नीति के अनुसार ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन व रक्षण की नीति को संबल दिया तथा राजस्थान ग्रामोद्योग मंडल की स्थापना की। इस नीति के अनुसार उन्होने राज्य में तेल मिलों की स्थापना व वनस्पति घी के आयात के आवेदनों को मंजूर नही किया। उन्होने बांसवाड़ा में लगने वाली तेल मिल के आवेदन को इस आधार पर निरस्त कर दिया इससे वहां गांवो में बहुतायत मे स्थापित कच्चीघाणी तेल उधोग चौपट हो जायेगा जिससे ग्रामीण लोग मजदूर बनकर रह जायेंगे व ग्राम स्वावलंबन पर यह बड़ा कुठाराघात होगा।

आजादी मिलने के कुछ वर्षो मे ही राष्ट्रीय राजनीति का स्वरुप बदल गया।कांग्रेस सेवा व संघर्ष के पथ को छोड़कर कुर्सी व सता के लक्ष्य से प्रेरित होने लगी।गांधीजी के बताये रचनात्मक कार्यो के प्रति भी कांग्रेस जनों मे उदासीनता व उपेक्षा का भाव आने लगा।इन असामायिक परिवर्तनों से खिन्न व निराश होकर सन्1951 मे सिद्वराज जी ने मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया तथा अपना शेष जीवन गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रमों को फलीभूत करने के लिए समर्पित करने का प्रण लिया। गांधी जी के पश्चात उनके रचनात्मक कार्यक्रमों का देशव्यापी संचालन विनोबा भावे के दिशानिर्देशन में संचालित हो रहा था। विनोबा जी ने 1951–52 मे भूदान–ग्रामदान आंदोलन प्रारंभ किया। सिद्वराज जी भी अपने मित्रों के साथ इस अहिसंक क्रांति के यज्ञ मे शामिल हो गये। पश्चिम बंगाल के प्रख्यात रचनात्मक कार्यकर्ता क्षितिश राय चौधरी उन्हें भगवान का सच्चा बंदा बताते हैं। वे कहते है कि सिद्वराज जी भूदान आंदोलन की विराट संभावनाओं से परिचित थे। उनका मानना था कि इससे भूमिहीनों को भूमि वितरण एवं ग्राम समाज को सशक्त एवं स्वावलंबी बनाने का किंचित सफल प्रयास हो सकता है। सब जानते है कि हमारी 80%जनसंख्या गांवो में निवास करती है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था संपन्न एवं विपन्न के बीच की असमानता और शोषण से व्याप्त है। इतिहास में पहली बार विनोबा ने स्पष्ट किया है कि देश की भूमिहीनता का समाधान भूदान–ग्रामदान के व्यवहारिक कदमों से हो सकता है और इनसे नैतिक साधनो, जनशिक्षण तथा लोगो का प्रेरित करके नवीन समाज रचना का कार्य प्रांरभ किया जा सकता है।

गांधी जी के रचनात्मक कार्यो को अनवरत जारी रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ की स्थापना की गई। भूदान–ग्रामदान आंदोलन में भी इस संस्था का अतुलनीय योगदान रहा। सिद्वराज जी ने 1955से 1960 तक इस संघ के मंत्री के रुप मे कार्य किया तथा 1952से 1966 तक सर्व सेवा संघ के प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष के रुप मे भी कार्य किया। भूदान आंदोलन के लेखा–जोखा व इससे संबंधित खबरों के प्रकाशन के लिए अंग्रेजी साप्ताहिक 'भूदान' तथा हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'भूदान यज्ञ' का प्रकाशन इनके संपादन में ही हुआ।

राजस्थान में सर्वोदय के विचार के प्रचार–प्रसार व रचनात्मक कार्यो को दिशा देने के लिए पाली में खीमेल नामक स्थान पर उन्होने सर्वोदय केन्द्र की स्थापना की। वे सर्व सेवा संघ के राजस्थान में आनुषंगिक संगठन राजस्थान समग्र सेवा संघ के भी अध्यक्ष रहें ।साथ ही राजस्थान खादी संघ एवं कुमारप्पा ग्रामस्वराज संस्थान, जयपुर आदि संस्थाओं में भी अध्यक्ष पद के दायित्व को सभांला।

श्री शांतिस्वरुप डाटा उनके संस्मरण में लिखते है कि विनोबाजी ''धरती–धन बटके रहेगा,गांव में कोई भूखा ना सोएगा'' के नारों से सारे देश में एक नई चेतना जगा रहे थे, उस समय ढड्‌डा जी ने भूदान, विचारदान,ग्रामदान आदि सद्प्रवृतियों के प्रसार के लिए अपने जीवन के बहुमूल्य 30–32 वर्ष ग्राम स्वराज्य की कल्पना को साकार करने के प्रयत्नों में लगाये है।

सन् 1953–54 में भूदान आंदोलन से सीधा जुड़ने के बाद श्री सिद्वराज जी कई प्रकार के प्रयोगों के साथ भी जुड़ते गये। स्वयं तो उसके साथ समरस हुए ही, साथ ही संपूर्ण परिवार को भी इस आंदोलन से जोड़ने का एक सफल प्रयास किया। सिद्वराज जी विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे तथा विकेन्द्रीकृत अर्थ रचना के वैचारिक एवं व्यावहारिक दोनो पक्षों का मूर्तरूप उनके जीवन में देखा जा सकता हैं।उनका मानना था कि वर्तमान आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संकट का कारण केन्द्रित अर्थ रचना है जो पाश्चात्य सभ्यता की देन है। अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ के 71 वें सम्मेलन की अध्यक्षता करतें हुए नासिक में उन्होने अपने उदबोधन मे बताया कि 1951 के अप्रैल में भूदान आंदोलन का जन्म हुआ। शुरु के 6–7 वर्षो तक भूदान के रुप इस आंदोलन का पहला दौर चला। इस अवधि में देश में करीब पौने छः लाख भूमिवानों ने लगभग 41 लाख एकड़ से ज्यादा जमीन स्वेच्छा से दान की जिसमें से लगभग साढे बारह लाख एकड़ जमीन बंट चुकी है जिसका लाभ साढे चार लाख गरीब परिवारों को मिला है। दुनिया के इतिहास में स्वेच्छा से इतनी जमीन एक हाथ से दूसरे हाथ मे जाने का अन्य उदाहरण नहीं है। भूदान का महत्व और भी स्पष्ट हो जायेगा यदि हम ध्यान दे कि गत 20 वर्षो में, तरह–तरह के कानून बनाने के बावजूद भी इससे आधी जमीन भी सरकार भूमिहीनो का नही दे सकी है। मेरे अपने प्रदेश राजस्थान से भूदान द्वारा अब तक 84हजार एकड़ जमीन हस्तांतरित हो चुकी है, जबकि राजस्थान सरकार के राजस्व राज्य मंत्री के अनुसार सीलिंग कानून के माध्यम से मात्र 10437 एकड़ जमीन आयी है उसमें से भी भूमिहीनों को कितनी मिल सकेगी इस पर संदेह है।

सिद्वराज जी ने उदबोधन मे आगे कहा कि भूदान के कार्यक्रम ने यह साबित कर दिया कि मनुष्य अपने स्वार्थ से ऊपर उठ सकता है। भूदान के गर्भ से आंदोलन का दूसरा चरण ग्रामदान के रूप में प्रकट हुआ। भूदान में स्वार्थ से थोड़ा ऊपर उठकर अपनी जमीन का कुछ हिस्सा देने की बात थी,जो अपेक्षाकृत आसान थी, लेकिन ग्रामदान में प्रचलित मान्यताओं और व्यवस्था को बदलने का सवाल था। ग्रामदान का काम देश के लगभग एक तिहाई गांवो में हुआ है।

आगे वे कहते है कि गत वर्ष से भूदान आंदोलन ने तीसरे चरण में प्रवेश किया है। इसमे अब ग्रामदान के विचार की नाव पर ग्रामस्वराज्य का भवन खड़ा करना है।उत्तर भारत में बिहार के बाद राजस्थान ही ऐसा प्रदेश है जहां एक पूरे जिले, बीकानेर मे योजनापूर्वक ग्रामदान के बाद का काम हो रहा है। ग्रामदान की शर्तों के अनुसार कार्य करना कठिन है क्योकि सैंकड़ा वर्षों की परम्पराओं और पीढियों से प्राप्त सुविधाओं तथा लाभ को छोड़कर,शोषण और जोर जबरदस्ती के बजाय परस्पर सहयोग और भाईचारे के आधार पर नये समाज की रचना का काम बहुत कठिन है। बीकानेर में काम करने के अनुभव से मै दावा कर सकता हूँ कि जनता आगे

कदम बढाने को तैयार है बशर्ते कि हम लोग धीरज और सातत्य के साथ उस काम में लगे रहे। इस सारी पृष्टभूमि मे हम देखे तो हम महसूस करेंगें कि सर्वोदय विचार और सर्वोदय आंदोलन वास्तव में वर्तमान युग मे अधंकार की शक्तियों के खिलाफ जनता की मुक्ति का महायज्ञ है।

सिद्दराज जी ने राजस्थान सेवक संघ में भी अध्यक्ष पद सहित अनेंकों दायित्वों का निर्वहन किया। यह संस्था 'सर्वेन्टस ऑफ इंडिया सोसायटी' की तर्ज पर बनी थी जो अपना पूरा जीवन सार्वजनिक कार्यों में लगाने वाले सदस्यों को आजीविका के लिए सहायता की व्यवस्था करती थी।श्री ठक्कर बापा, श्री कृष्णदास जाजू व जयप्रकाश नारायण आदि इसके अध्यक्ष रहे है। राजस्थान सेवक संघ में मुख्यतया राजस्थान के ऐसे समाजसेवक शामिल थे जो अपना पूरा समय भूदान, ग्रामदान हरिजनोद्दार अथवा ऐसी ही रचनात्मक प्रवृतियों में देते थे और जीवनयापन के लिए न्यूनतम निर्वाह व्यय लेते थे।

शिक्षाविद जो त्रिलोकचंद जैन, सिद्दराज जी के संस्मरण मे लिखते है कि उनका जीवन सत्यम् शिवम सुन्दरम की उपासना है। सुचिता व सरलता इनके जीवन की दिव्यता है। इनके जीवन पर गांधीजी, गुरुदेव टैगोर, जयप्रकाश नारायण, ठक्कर बापा तथा श्री कृष्णदास जाजू का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। गांधी से उन्होने दर्शन एवं जीवन की कला ली, विनोबा से करुणा,जयप्रकाश जी से क्रांतिदृष्टि, गुरुदेव से सौदर्य बोधतथा जाजू जी से हर क्षण जीवन जीने की कला ली है तथा ठक्कर बापा से कठोर जीवन की साधना। इन मनस्वी पुरुषों के जीवन एवं चिंतन का समुच्चय स्वरुप सिद्दराज जी भाईसाहब के जीवन में परिलक्षित होता है।

सिद्दराज जी मे जब तक शक्ति रही, उन्होने अपने हाथ से बुना हुआ कपड़ा ही पहना। ऐसे महान सर्वोदयी, साधक, मनस्वी तथा समग्र क्रांति के उपासक सद्पुरुष का 9 मार्च 2006 को देहांत हो गया। राजस्थान में सर्वोदय विचार व भूदान आंदोलन को फलीभूत करने मे इनका अतुलनीय योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

~ श्री सिद्दराज जी ढड्डाः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पॉपुलर प्रिंटर्स,जयपुर

~ श्री सिद्दराज जी ढड्डाः विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 1958

~ श्री धीरेन्द्र मजूमदारः क्रांति का प्रयोग और चितंन,सर्व सेवा संघ,राजघाट,वाराणसी 1997

~ श्री धीरेन्द्र मजूमदारः समग्र सेवा की और, भाग दो एवं तीन, सर्व सेवा संघ, वाराणसी

~ भूदान यज्ञः सर्व सेवा सघं प्रकाशन वाराणसी

~ सर्वोदयः सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी मार्च अप्रैल 1953

~ सर्वोदयः जून 1953

~ नासिक सर्वोदय सम्मेलन (1971) विवरण।.

❖◆❖